International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 1, January-February, 2026

मधुकर की कविताओं में गिरमिटिया जीवन का यथार्थ और ऐतिहासिक चेतना

रजनी

शोधार्थी, हिंदी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

शोध-सार:

गिरमिटिया प्रथा भारतीय इतिहास की एक अत्यंत पीड़ादायक, किंतु उपेक्षित सामाजिक-ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है। औपनिवेशिक काल में लाखों भारतीय मजदूरों को अनुबंध (गिरमिट) के माध्यम से विदेशों में बंधुआ श्रम के लिए भेजा गया। हिंदी साहित्य में इस अनुभव को स्वर देने वाले कवियों में मधुकर का नाम विशेष महत्व रखता है। उनकी कविताएँ केवल करुणा का आख्यान नहीं, बल्कि गिरमिटिया समाज की सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक संघर्ष, भाषायी अस्मिता और ऐतिहासिक चेतना का सशक्त दस्तावेज हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में विमलेश कांति वर्मा द्वारा संपादित पुस्तक 'मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य' में संकलित ब्रजेंद्र कुमार भगत मधुकर की कविताओं के माध्यम से गिरमिटिया जीवन के यथार्थ और उसमें निहित ऐतिहासिक चेतना का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : प्रवासी, गिरमिटिया, मॉरीशस, साहित्य, संस्कृति, भाषा, संवेदना, मजदूर, प्रतिरोध, भाषायी चेतना, समाज।

भारतीय प्रवासी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अध्याय गिरमिटिया साहित्य है। यह साहित्य केवल प्रवासन की कथा नहीं, बल्कि शोषण, विस्थापन, स्मृति और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रक्रिया का साहित्य है। हिंदी साहित्य में इस अनुभव को संवेदनात्मक गहराई और ऐतिहासिक दृष्टि के साथ अभिव्यक्त करने वाले कवि मधुकर गिरमिटिया समाज की पीड़ा और संघर्ष के प्रामाणिक स्वर हैं।

मधुकर की कविताओं में गिरमिटिया जीवन केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान से संवाद करता हुआ इतिहास है। उनकी कविता इतिहास को जीवंत बनाती है और गिरमिटिया मजदूर को मौन पीड़ित नहीं, बल्कि चेतन, संघर्षशील और स्वप्नदृष्टा मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करती है। 1834 में दास प्रथा की समाप्ति के बाद ब्रिटिश उपनिवेशों में श्रमिकों की आवश्यकता ने गिरमिटिया प्रथा को जन्म दिया। भारत से मजदूरों को फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना आदि देशों में भेजा गया। 'गिरमिट' शब्द अंग्रेज़ी के Agreement का अपभ्रंश है। अनुबंध की भाषा, शर्तें और परिणाम मजदूरों के लिए अमानवीय थे।

मधुकर की कविताएँ इसी ऐतिहासिक संदर्भ को काव्यात्मक रूप में पुनः रचती हैं। वे इतिहास को केवल घटना-क्रम नहीं, बल्कि अनुभव की चेतना के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

'मैं' कविता में कवि आत्म सत्ता और सामूहिक पहचान की व्याख्या करता है।

कविता 'मैं' में कवि का 'मैं' व्यक्तिगत न होकर सामूहिक है। यह गिरमिटिया मजदूर का आत्मवाचक स्वर है। यह 'मैं' इतिहास द्वारा कुचला गया है, परंतु मिटा नहीं है। कविता में आत्मगौरव, स्मृति और प्रतिरोध का स्वर स्पष्ट है। गिरमिटिया का 'मैं' अपनी पहचान को इतिहास के हाशिए से केंद्र में लाने का प्रयास करता है। कवि लिखता है-

"मैं चलता-फिरता बाग़ी हूँ ।
सत्य-न्याय अनुरागी हूँ ।।
शुचि-प्रेम-त्याग का व्रतधारी, सेवक निःस्वार्थ सदाचारी ।
दुष्ट जनों पर रिपु भारी, मैं दलितों का हित भागी हूँ ।।"1

मैं कविता में कवि गुमराह हुए लोगों को मार्ग दिखाने की बात करता है दुखियों का दर्द मिटाने की बात करता है और वह घोषणा करता है कि वह निर्बलों को नहीं सताता है। जैसे -

"मैं चलता-फिरता बाग़ी हूँ ।
भूले को मार्ग दिखाता हूँ, दुखियों का दर्द मिटाता हूँ ।
निर्बल को नहीं सताता हूँ, मैं बना आज गृह-त्यागी हूँ ।।
मैं चलता-फिरता बाग़ी हूँ ।
कहती दुनिया मुझको पागल, पीकर के प्याला भरा गरल ।
मिट जाएगा अस्तित्व संभल, मैं अग्निराग का रागी हूँ ।।
मैं चलता-फिरता बाग़ी हूँ ।"2

'छोटा हिंदुस्तान' कविता में सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के बारे में बताया गया है। 'छोटा हिंदुस्तान' गिरमिटिया समाज के सांस्कृतिक संघर्ष का प्रतीक है। विदेश की धरती पर भारतीय मजदूर अपनी भाषा, त्योहार, लोकगीत और धार्मिक विश्वासों के माध्यम से भारत को पुनः रचते हैं। यह कविता भारत की स्वतंत्रता और एकता की भावना को व्यक्त करती है। कवि कहता है कि भारत एक छोटा सा देश है, लेकिन इसकी स्वतंत्रता और एकता की भावना बहुत बड़ी है। कवि भारत की प्राकृतिक सौंदर्य, संस्कृति और इतिहास को याद करता है और कहता है कि यह देश हमारे लिए बहुत प्यारा है। कवि भारत की स्वतंत्रता के लिए शहीद हुए वीरों को नमन करता है और कहता है कि हम उनकी शहादत को कभी नहीं भूलेंगे। कवि लिखते हैं-

"छोटा हिंदुस्तान है मारिस, छोटा हिंदुस्तान।
इस वसुधा के सभ्य निवासी, तीन लाख हैं भारत वासी ।
मुक्ति के हैं सब अभिलाषी, निर्बल हों या बलवान ।।
दीन-दुखी को रोज़ सताते, चैन की बंशी नित्य बजाते।
स्वेतांगी हैं राज चलाते, कर सब का अपमान ।।
नहीं भूलेंगे उन दिनों को, नहीं सहेंगे अब जुल्मों को।
विजय मिलेगी निश्चय हमको, छिड़ा महासंग्राम ।।"3

यह कविता दर्शाती है कि गिरमिटिया जीवन केवल पीड़ा नहीं, बल्कि संस्कृति के पुनर्सृजन की प्रक्रिया है। इतिहास यहाँ केवल विस्थापन का नहीं, बल्कि सांस्कृतिक जिजीविषा का इतिहास बन जाता है।

ब्रजेंद्र कुमार भगत मधुकर की कविता "गान यही मजदूरों का" मजदूरों की शक्ति और एकता की भावना को व्यक्त करती है। कविता में मजदूरों को अपनी ताकत का अहसास कराने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने का संदेश दिया गया है। कवि कहता है कि मजदूर ही दुनिया की रीढ़ हैं और

उनके बिना कुछ भी नहीं हो सकता। कविता में मजदूरों की एकता और संघर्ष की भावना को दर्शाया गया है। कविता में कवि श्रम और प्रतिरोध का स्वर अभिव्यक्त करता है।

कवि यह कहना चाहता है कि मजदूरों को अपनी शक्ति का अहसास करना चाहिए और अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए। जैसे –

"उसकी आँखों में बसता है, करुणा का सागर सच जानो।
निर्धन के लोहू में सनकर, पैसा बहता धनवानों का ।।
वह वस्त्र बिना थर-थर काँपे, मालिक की गाड़ी भी हाँके।
गर्मी हो चाहे जाड़ा हो, चाबुक चलता बलवानों का ।।
अब रुक जा ऐ अत्याचारी, कर बंद शीघ्र हिंसा चोरी।
वर्ना मिट जाएगा पल में, है गान यही मज़दूरों का ।।"4

यह कविता श्रमिक वर्ग की सामूहिक आवाज़ है। इसमें मजदूर की पीड़ा, श्रम की गरिमा और शोषण के विरुद्ध संघर्ष का स्वर मुखर है। मधुकर यहाँ मजदूर को इतिहास का मूक पात्र नहीं, बल्कि परिवर्तन का सक्रिय कारक बनाते हैं। कविता में निहित ऐतिहासिक चेतना वर्ग-चेतना से जुड़ी हुई है।

'प्रवासी की रामकहानी' मिथक और यथार्थ का संयोजन है। इस कविता में रामायण के मिथक को प्रवासी अनुभव से जोड़ा गया है। प्रवासी मजदूर की कथा एक आधुनिक राम कथा बन जाती है, जहाँ वनवास समुद्र पार है और रावण शोषक व्यवस्था। यह कविता ऐतिहासिक अनुभव को सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से सार्वभौमिक बनाती है। यह कविता एक प्रवासी की दर्दभरी कहानी है। कविता में प्रवासी अपने गांव से शहर में काम की तलाश में आता है, लेकिन उसे वहां कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कविता में प्रवासी की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है। कवि कहता है कि प्रवासी की जिंदगी एक संघर्ष है, लेकिन वह हार नहीं मानता। कविता में प्रवासी की मजबूरी और उसके सपनों का वर्णन है। जैसे –

"सुनो सुनो ऐ भारत वालो ! परवासी की राम कहानी !
जो परवासी आँखों से नित आहों का बरसाता पानी ।
कलकत्ते, बंबई बंदर का, छोड़ी नाव किनारा ।
परवासी ने आशा छोड़ी, छूटा नाता प्यारा ।।
भैया ने बहिना को छोड़ा, माता बिटिया रानी ।
मातृभूमि की चाह प्रेम में, बहा नैन से पानी ।।
दुःख से भरी है इनकी बातें, दर्द भरी है वाणी ।।सुनो ?।।
अरकाटी ने कौड़ी में ही बेच दिया भाई को ।
शर्म लाज सब छोड़ गली में, लूट लिया भाई को ।।
ग्राम निवासी भोले-भाले, पड़े नीच के पाले ।
दानों के मुहताज बन गए, अन्न खिलाने वाले।"5

'हिंदी की महिमा' में भाषायी चेतना का उल्लेख किया गया है। मधुकर की कविताओं में हिंदी केवल भाषा नहीं, बल्कि स्मृति, अस्मिता और संघर्ष का माध्यम है। यह कविता हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी शक्ति को दर्शाती है। कविता में हिंदी को भारत की आत्मा और संस्कृति का प्रतीक बताया गया है। कवि कहता है कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। कविता में हिंदी के माध्यम से भारत की एकता और अखंडता को मजबूत करने का संदेश दिया गया है। कवि हिंदी की महिमा को गाता है और कहता है कि यह भाषा हमें एकजुट करती है। जैसे –

"गुन गाईला हिंदी के हम भोजपुरी बोली में,
सब भाषा के आदि अंत बा ओकर ही झोली में ।
उर्दू, पंजाबी, बंगाली, मद्रासी, गुजराती,
अंग्रेजी, फ्राँसे, बाकी सब गावत गुन दिनराती ।
बात करीला हिंदी में ही हम आपन टोली में,
गुन गाईला हिंदी के हम भोजपुरी बोली में ।।
गाय, भैंस के दूध के मिंतर गुकजारा होइ जाला,
लेकिन माँ के दूध से सब के छाति जुड़ाई जाला ।
औरी भाखा रोटी ख़ातिर सीखल : लीखल जाला,
जीवन बा आपन हिंदी में बा अमृत का प्याला ।
गाईला हम गीत सदा ही हिंदी के होली में,
गुन गाईला हिंदी के हम भोजपुरी बोली में ।।" 6

'समुद्र यात्रा-पांचवा अध्याय' में समुद्र यात्रा के दौरान हिंदी का सहारा प्रवासी को मानसिक बल देता है। यहाँ ऐतिहासिक चेतना भाषायी चेतना में रूपांतरित हो जाती है। कविता में समुद्र यात्रा के पांचवे अध्याय का वर्णन है, जहां कवि समुद्र की विशालता और उसकी शक्ति को दर्शाता है। कवि कहता है कि समुद्र की लावों में जीवन की कहानी है, और उसकी गहराइयों में अनजाने रहस्य हैं। कविता में समुद्र की सुंदरता और उसकी महत्वता को व्यक्त किया गया है। कवि समुद्र को एक प्रतीक के रूप में देखता है, जो जीवन की चुनौतियों और अनिश्चितताओं को दर्शाता है। जैसे -

"दिवस का अंत था आया गगन में लालिमा छाई,
दिवाकर तरस खाकर के छुपा सागर की गोदी में ।
नदी हुगली की जेटी पर लगा जलयान लकड़ी का,
कभी हिलता कभी डुलता उछलता गंग गोदी में ।
न इंजन था लगा उसमें न केबिन था न सैलून था,
तने थे पाल रस्सी से पवन का आसरा बस था ।
हृदय में पीर लेकर के नयन में ढारकर आँसू,
चढ़े कुली सवा दो सौ, चले परदेश बेचारे ।"7

'बापू जग के पार लगवलन' कविता में कवि ने महात्मा गांधी और गिरमिटिया चेतना का उल्लेख किया गया है। महात्मा गांधी गिरमिटिया इतिहास के केंद्रीय पात्र हैं। यह कविता गांधी को केवल ऐतिहासिक व्यक्ति नहीं, बल्कि नैतिक चेतना के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है। गांधी यहाँ गिरमिटिया समाज के उद्धारक और आत्मसम्मान के स्रोत हैं।

"बापू जग के पार लगवलन ।
सुधा-सिंधु के धार बहवलन।
ख़ाली भारत ही के नाहीं,
दुनिया के उद्धार करवलन ।
सकल अहिंसा के ही बल पर
हिंसा के अंगार बुझवलन ।
बापू...
ऊँच-नीच के भेद न चाहीं
भइचारा के पाठ पढ़वलन,

छूत-छात के भूत जगत से
पल-भर में ही नास करवलन।"8

'मरिच मुसकाइल हो' और 'चेतावनी' में पीड़ा से प्रतिरोध तक के स्वर सुनाई देते हैं। इन कविताओं में गिरमिटिया जीवन की त्रासदी और विद्रोह दोनों स्वर मिलते हैं। "मरिच मुस्काइल हो" कविता में कवि मरिच की मुस्काहट को एक प्रतीक के रूप में देखता है, जो जीवन की सुंदरता और आशा को दर्शाता है। कविता में मरिच की मुस्काहट के माध्यम से जीवन की चुनौतियों का सामना करने का संदेश दिया गया है।

इसी प्रकार "चेतावनी" कविता में कवि समाज को चेतावनी देता है कि वे अपने आसपास की समस्याओं को नजरअंदाज न करें। कविता में कवि समाज को जागरूक करने का प्रयास करता है कि वे अपने अधिकारों के लिए लड़ें और समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करें। 'चेतावनी' कविता भविष्य के प्रति सजगता का आह्वान करती है, जिससे इतिहास की पुनरावृत्ति न हो।

"हिंदी गई रसातल में तो गई हमारी आशा,
संस्कृति सिसक-सिसक रोएगी धर्म मरेगा प्यासा ।
हिंदी को कुचलेगी प्यारे गौरांगों की भाषा,
हिंदू एक न होगा जग में पलट जाएगा पासा ।
जिस हिंदी ने स्वतंत्रता दी उसको नहीं लजाएँ,
राम, कृष्ण, गौतम, गाँधी की सीख सदा अपनाएँ ।।
युवक-युवतियों आओ मिलकर हिंदी ध्वजा उड़ाएँ,
दुनिया के कोने-कोने में हिंदी सुमन खिलाएँ ।"9

'गिरमिटिया के सपना' में आशा और भविष्य दृष्टि का उल्लेख किया गया है। यह कविता गिरमिटिया समाज के सपनों को अभिव्यक्त करती है–सम्मान, शिक्षा, भाषा और स्वतंत्र अस्तित्व का सपना। यहाँ ऐतिहासिक चेतना भविष्य की ओर उन्मुख हो जाती है। कवि लिखते हैं-

"सोनवा के लोभवा में देसवा बिसरले हो,
सोना सुन मरीचिया के नाम ।
सुनके कि पग-पग सोना सवा सेर,
मिली करे के न परी एकौ काम ।"10

"'हिंदी किरियोली' और 'कौन बचाए हिंदी बोली' में भाषा का संकट बताया गया है। "हिंदी किरियोली" कविता में कवि हिंदी भाषा की महत्वता और उसकी सुंदरता को दर्शाता है। कवि कहता है कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। "कौन बचाए हिंदी बोली" कविता में कवि हिंदी भाषा के भविष्य की चिंता व्यक्त करता है। कवि कहता है कि अगर हम हिंदी का सम्मान नहीं करेंगे, तो कौन करेगा? कविता में कवि हिंदी के संरक्षण और प्रचार के लिए आह्वान करता है। हिंदी भाषा के महत्व को दर्शाती 'हिंदी किरियोली' की पंक्तियां इस प्रकार हैं-

"किरियोली हब्शी की बोली, पहनी फ्रांसीसी की चोली ।
किरियोली से कैसा नाता, हिंदी जननी जग की त्राता ।।
किरियोली है कौड़ी कानी, हिंदी भाषाओं की रानी ।
किरियोली नासे नित धर्मा, हिंदी सिखलाती सत्कर्मा ।।
किरियोली 'किरयोल' जगावे, हिंदी हिंदू मान बढ़ावे ।

किरियोली की चिकनी बातें, हिंदी पर करती सौ घातें ।।
किरियोली नाचे दिन राती, हिंदी सभ्या शुचि शरमाती ।
किरियोली 'सेगा' भरमाता, अनपढ़ हिंदू गले लगाता ।।
किरियोली बिलगाने वाली, हिंदी फूट मिटाने वाली ।
किरियोली बोली है ख़ाली, हिंदी गौरव गरिमा वाली ।।
किरियोली कौवों की नानी, हिंदी हंसों की है रानी।"11

इन कविताओं में प्रवासी समाज में हिंदी के लुप्त होने का भय व्यक्त हुआ है। यह भाषा-संकट वस्तुतः सांस्कृतिक संकट है। मधुकर यहाँ इतिहास को चेतावनी के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष रूप से कहे तो मधुकर की कविताएँ गिरमिटिया जीवन का केवल भावात्मक चित्रण नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। उनकी कविताओं में यथार्थ और ऐतिहासिक चेतना परस्पर गुंथे हुए हैं। वे गिरमिटिया मजदूर को इतिहास का पीड़ित पात्र नहीं, बल्कि उसकी चेतना, भाषा और सपनों के साथ प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार मधुकर का काव्य गिरमिटिया साहित्य को न केवल विस्तार देता है, बल्कि उसे ऐतिहासिक गरिमा और साहित्यिक ऊँचाई भी प्रदान करता है।

संदर्भ सूची:

1 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, मैं, पृष्ठ 78
2 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, मैं, पृष्ठ 78
3 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, छोटा हिंदुस्तान, पृष्ठ 78-79
4 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, है गान यही मजदूरों का, पृष्ठ 79
5 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, प्रवासी की राम कहानी, पृष्ठ 79
6 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, हिंदी की महिमा, पृष्ठ 80
7 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, (समुद्र यात्रा) पांचवा अध्याय, पृष्ठ 83
8 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, बापू जग के पार लगवलन, पृष्ठ 81
9 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, चेतावनी, पृष्ठ 85
10 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, सोना के सपना गिरमिटिया के सपना, पृष्ठ 85
11 विमलेश कांति वर्मा, मॉरीशस का सृजनात्मक हिंदी साहित्य, हिंदी किरियोली, पृष्ठ 86